ISSN:2583-8849



काव्य-संग्रह : पत्रांजन
लेखिका : कुसुम भारद्वाज
प्रकाशक : हेरम्ब प्रकाशन
विधा : कविता
मूल्य : ₹250 पृष्ठ-90

समीक्षक -आशा पाण्डेय ओझा 'आशा'
31 न्यू वर्मा कॉलोनी
सविना थाना वाली गली
हिरण मगरी सेक्टर 9
उदयपुर 313002

पत्रांजन' संवेदनाओं, संस्कारों और जीवन-मूल्यों का काव्यात्मक दस्तावेज़

साहित्य मनुष्य के अंतर्मन में उठने वाली भावनाओं, विचारों, अनुभूतियों और जीवन-दृष्टि की अभिव्यक्ति का सशक्त एवं संवेदनशील माध्यम है। कविता जब जीवन के विविध पक्षों को स्पर्श करती हुई पाठक के हृदय तक पहुँचती है, तब वह केवल शब्दों का संयोजन न रहकर संवेदना, संस्कार और चिंतन की वाहक बन जाती है। कविता की यही विशेषता उसे अन्य साहित्यिक विधाओं से अलग पहचान प्रदान करती है।

कुसुम भारद्वाज जी का काव्य-संग्रह 'पत्रांजन' और इसमें संकलित उनकी विविधरंगी कविताएँ इसी भावभूमि पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराती हैं। 94 पृष्ठों में समाहित यह संग्रह अपने शीर्षक, विषय-विविधता और भावाभिव्यक्ति के माध्यम से पाठक को जीवन के अनेक रंगों से परिचित कराने का प्रयास करता है।

'पत्रांजन' शीर्षक अपने आप में एक अलग अर्थ-व्यंजना की संभावना लिए हुए है। 'पत्र' को हम संदेश, अभिव्यक्ति और संवाद के प्रतीक के रूप में देख सकते हैं, जबकि 'अंजन' आँखों में लगाया जाने वाला वह पदार्थ है, जो दृष्टि को विशिष्ट पहचान देता है। इस दृष्टि से इन कविताओं को इन पृष्ठओं पर भावों के ऐसे संप्रेषण के रूप में ग्रहण किया जा सकता है, जो जीवन को देखने और समझने की दृष्टि को अधिक संवेदनशील बनाता है। साहित्य का कार्य भी तो यही है कि वह हमारे भीतर देखने, सोचने और अनुभव करने की नई खिड़कियाँ खोलता है। संग्रह की कविताएँ विविध विषयों के माध्यम से इसी व्यापक साहित्यिक प्रयोजन की ओर संकेत करती हैं।

अपने चारों माता-पिता को समर्पित यह कृति कवयित्री के मन में उनके प्रति गहरे अनुराग और आत्मीयता को अभिव्यक्त करती है। माता-पिता के संरक्षण में जीवन की राह सरल और सुरक्षित महसूस करने वाली कवयित्री उनके बिछुड़ने के बाद हर सुख-सुविधा में एक अधूरापन अनुभव करती हैं। उनका मन पुनः माता-पिता का सान्निध्य पाने को तरसता है और अगले जन्म में भी उन्हीं की संतान बनने की अभिलाषा रखता है। यह समर्पण कुसुम जी के माता-पिता से जुड़े भावनात्मक संबंधों की गहराई को दर्शाता है।

पुस्तक का आरंभ 'मंगलाचरण' से होना कवयित्री के संस्कार, संस्कृति और ईश्वर के प्रति आस्था का प्रमाण है। भारतीय साहित्यिक परंपरा में मंगलाचरण केवल औपचारिक शुरुआत नहीं, बल्कि किसी शुभ कार्य के प्रति श्रद्धा, विश्वास और सकारात्मक संकल्प की अभिव्यक्ति है। इसके पश्चात् 'माँ शारदे' और 'श्री राम' जैसी रचनाओं का समावेश संग्रह की सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक पृष्ठभूमि को और अधिक स्पष्ट करता है। माँ शारदे ज्ञान, विवेक, वाणी और सृजनशीलता की अधिष्ठात्री हैं। एक रचनाकार के लिए उनका स्मरण अपने रचनाकर्म को ज्ञान और सद्बुद्धि से जोड़ने का भावपूर्ण माध्यम है।

इसी प्रकार श्रीराम भारतीय जनमानस में मर्यादा, कर्तव्य, त्याग, करुणा और आदर्श आचरण के प्रतीक हैं। उनका स्मरण हमारी सांस्कृतिक चेतना में रचे-बसे उन जीवन-मूल्यों की याद दिलाता है, जिनकी प्रासंगिकता प्रत्येक युग में बनी रहती है। इन रचनाओं के माध्यम से संग्रह की शुरुआत श्रद्धा और संस्कारों के वातावरण में होती है। यह आरंभ पाठक को संकेत देता है कि कवयित्री की संवेदना व्यक्तिगत अनुभूतियों तक सीमित नहीं, बल्कि अपनी सांस्कृतिक जड़ों से भी गहराई से जुड़ी हुई है।

'मेरे श्रोतागण' रचना विशेष ध्यान आकर्षित करती है। यह कविता कवयित्री और उनके पाठकों अथवा श्रोताओं के बीच आत्मीय संबंध की ओर संकेत करता है। कविता का सृजन भले ही एकांत में होता हो, लेकिन उसकी सार्थकता पाठक या श्रोता तक पहुँचने पर ही पूर्णता प्राप्त करती है। रचनाकार को मिलने वाला प्रोत्साहन, स्नेह और स्वीकार्यता उसके लेखन को निरंतर ऊर्जा प्रदान करते हैं। इस दृष्टि से यह रचना कवयित्री के कृतज्ञता-भाव और साहित्यिक संवाद की भावना को अभिव्यक्त करती है। साहित्य में पाठक और रचनाकार का संबंध एकतरफा नहीं होता; दोनों एक-दूसरे की संवेदना को समृद्ध करते हैं।

इतिहास, राष्ट्र और सामाजिक चेतना के स्वर भी इस संग्रह की अनेक कविताओं में मुखरित होते हैं। 'महानायक महाराणा प्रताप' कविता उनके शौर्य, ध्येय-निष्ठा और राष्ट्रप्रेम का स्मरण कराती है, वहीं 'वीर बालिका कालीबाई' का प्रसंग राष्ट्रभक्ति और बलिदान की प्रेरणा देता है। 'एक देश' और 'भारत माता' जैसी कविताएँ राष्ट्रगौरव, राष्ट्रीय एकता, विश्वशांति, सद्भाव तथा वसुधैव कुटुंबकम् की भावना को अभिव्यक्त करती हैं।

'वीर बालिका कालीबाई' कविता आदिवासी अंचल की उस साहसी बालिका का पुनः स्मरण कराती है, जिसने शिक्षा और अपने शिक्षक के प्रति निष्ठा निभाते हुए बलिदान दिया। कालीबाई के जीवन और संघर्ष को आधार बनाकर कवयित्री ने बालिका-साहस, शिक्षा के अधिकार और अन्याय के प्रतिरोध जैसे मूल्यों को रेखांकित करने का सार्थक प्रयास किया है। यह प्रसंग पाठक को बताता है कि साहस और कर्तव्यनिष्ठा किसी आयु या सामाजिक स्थिति के मोहताज नहीं होते। दृढ़ संकल्प और अपने उद्देश्य के प्रति निष्ठा व्यक्ति को असाधारण बना सकती है। 'एक देश' कविता राष्ट्रीय एकता, सामूहिक पहचान और विविधता में एकता की भावना की ओर संकेत करती है। भारत की सांस्कृतिक विशेषता उसकी भाषाई, धार्मिक, सामाजिक और क्षेत्रीय विविधता में निहित है। इस विविधता के बावजूद एक राष्ट्र के रूप में हमारी साझा पहचान हमें परस्पर जोड़ती है। यह विषयवस्तु कविता को व्यापक सामाजिक संदर्भ प्रदान करती है और पाठक को अपने व्यक्तिगत दायरे से बाहर निकलकर राष्ट्र तथा समाज के प्रति अपने दायित्वों पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है।

संग्रह में समकालीन घटनाओं और उनसे जुड़ी मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति भी यत्र-तत्र दिखाई देती है। 'पुलवामा : 14.2.2019' और 'पालघर : 16.4.2020' जैसी तिथियों के साथ रचनाओं का समावेश कवयित्री की अपने समय के प्रति सजगता और संवेदनशीलता को दर्शाता है। पुलवामा की घटना ने पूरे देश को गहरे शोक और आक्रोश से भर दिया था। इस घटना पर आधारित कविता में सैनिकों के प्रति सम्मान, उनके बलिदान की स्मृति और राष्ट्र के प्रति कर्तव्य-बोध जैसे भाव उभरकर सामने आते हैं। कवयित्री के मन में देश के सैनिकों के प्रति गहरी श्रद्धा और आदर है, वहीं षड्यंत्र तथा साजिश रचने वाली शक्तियों के प्रति क्षोभ और धिक्कार का स्वर भी मुखर है।

इसी प्रकार 'पालघर' कविता सामाजिक हिंसा, मानवीय विवेक और समाज में व्याप्त संवेदनहीनता पर विचार करने के लिए विवश करती है। साहित्य का एक महत्त्वपूर्ण दायित्व यह भी है कि वह अपने समय की घटनाओं को केवल समाचार के रूप में न देखे, बल्कि उनके पीछे छिपे मानवीय प्रश्नों को सामने लाए। हिंसा, असहिष्णुता और सामाजिक विघटन के प्रसंगों में कविता मनुष्य को दूसरे मनुष्य के प्रति अधिक संवेदनशील बनाने का प्रयास कर सकती है।

इन दोनों कविताओं की उपस्थिति इस बात को पुष्ट करती है कि कवयित्री की दृष्टि समकालीन समाज और राष्ट्रीय जीवन की घटनाओं तक गहराई से पहुँचती है। वह वहाँ व्याप्त विसंगतियों, विवशताओं और परिस्थितियों पर प्रश्न उठाती हैं। इन रचनाओं में भाव-पक्ष की गहनता के साथ-साथ शब्दों का चयन भी कवयित्री की अभिव्यक्ति-सामर्थ्य को प्रकट करता है।

'ओ मेरे बंधुओं' कविता में कवयित्री भारत के प्राचीन गौरव के पतन, राष्ट्रीय स्वाभिमान, राजनीतिक छलावे, भ्रष्टाचार, जातिवाद, भाई-भतीजावाद और तुष्टीकरण जैसी विसंगतियों पर प्रश्न उठाती हैं। सत्ता की भूख और स्वार्थ से आहत होकर वे देशवासियों को आत्ममंथन करने तथा राष्ट्रहित के प्रति जागरूक होने का संदेश देती हैं। यह एक लंबी कविता है, लेकिन इसमें उठाए गए अनेक प्रश्न अपने समाधान की माँग करते हैं। इसकी विषयवस्तु पाठक को देश की वर्तमान परिस्थितियों पर गंभीरता से विचार करने के लिए प्रेरित करती है।

'मतदान' कविता में कवयित्री मतदान के प्रति जन-जागरूकता उत्पन्न करती हैं। वे मतदान के बीज को राष्ट्रभक्ति की खाद से पुष्ट करने का आह्वान करते हुए नागरिकों को अपने मताधिकार के प्रति सजग और जिम्मेदार बनने की प्रेरणा देती हैं। उनके लिए मतदान केवल एक अधिकार नहीं, बल्कि राष्ट्र के प्रति नागरिकों के कर्तव्य-बोध और लोकतांत्रिक चेतना का प्रतीक भी है। लोकतंत्र की मजबूती नागरिकों की जागरूकता और विवेकपूर्ण निर्णय पर निर्भर करती है। इस दृष्टि से यह कविता अपने सामाजिक उद्देश्य को रेखांकित करती है।

'हिंदी' शीर्षक कविता में कवयित्री हिंदी भाषा के गौरव, स्वाभिमान और आवश्यकता को रेखांकित करते हुए उसके प्रति प्रेम एवं आत्मीयता का भाव जगाती हैं। उन्हें यह स्थिति अत्यंत अनुचित और विडंबनापूर्ण लगती है कि विद्यालयों में ऐसे नियम भी बनाए जाते हैं, जिनके अंतर्गत हिंदी में बातचीत करने पर जुर्माना लगाया जाता है। अपनी ही भाषा में संवाद करने पर दंडित किया जाना हिंदी को मानो अपराधी के कटघरे में खड़ा करने जैसा है। यह स्थिति न केवल हिंदी के सम्मान पर प्रश्नचिह्न लगाती है, बल्कि भाषाई स्वाभिमान और स्वतंत्र अभिव्यक्ति की भावना के भी प्रतिकूल है। कवयित्री का यह स्वर हिंदी के प्रति प्रेम, सम्मान और गौरव की भावना को सशक्त बनाता है।

'पर्यावरण' कविता आज के समय में विशेष प्रासंगिकता रखती है। आधुनिक विकास की दौड़ में प्रकृति के साथ मनुष्य का संबंध अनेक चुनौतियों से घिर गया है। प्रदूषण, जल-संकट, वनों की कटाई और जैव-विविधता का क्षरण केवल पर्यावरणीय समस्याएँ नहीं, बल्कि मानवीय अस्तित्व से जुड़े प्रश्न हैं। एक रचनाकार इन विषयों के माध्यम से संवेदना जगाने और प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व का बोध कराने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। प्रकृति पर लिखी कविता तब अधिक प्रभावशाली होती है, जब वह केवल वृक्ष लगाने या पर्यावरण बचाने का संदेश देने तक सीमित न रहकर मनुष्य और प्रकृति के आत्मीय संबंध को भी उद्घाटित करे। कवयित्री ने इस रचना में पौधे लगाने को उत्सव और सेल्फी तक सीमित कर देने की प्रवृत्ति पर करारा व्यंग्य किया है। पर्यावरण-जागरूकता के नाम पर पौधारोपण को केवल दिखावे का माध्यम बना देना प्रकृति के प्रति हमारी वास्तविक जिम्मेदारी से दूर ले जाता है। प्रकृति हमारे जीवन का आधार है और उसका संरक्षण भविष्य की पीढ़ियों के प्रति हमारी नैतिक जिम्मेदारी भी है। कविता इसी उत्तरदायित्व की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करती है।

संग्रह में 'जीवन', 'मृत्यु', और 'शाश्वत' जैसी कविताएँ जीवन-दर्शन के गंभीर पक्षों की ओर संकेत करती हैं। जीवन और मृत्यु एक-दूसरे से अलग नहीं, बल्कि अस्तित्व के दो अनिवार्य सत्य हैं। मनुष्य का जीवन सीमित है, परंतु उसके कर्म, विचार और संस्कार समाज में लंबे समय तक प्रभाव छोड़ सकते हैं। ये कविताएँ जीवन की सार्थकता, अस्तित्व की क्षणभंगुरता और मानवीय मूल्यों की स्थायित्वशीलता जैसे प्रश्नों पर विचार करने के लिए पाठक को आत्ममंथन की भूमि प्रदान करती हैं।

'शाश्वत' कविता जीवन के उन मूल्यों की ओर संकेत करती है, जो समय के परिवर्तन के बावजूद अपनी सार्थकता

बनाए रखते हैं। जीवन में बहुत कुछ परिवर्तनशील है, लेकिन कुछ भाव और मूल्य ऐसे होते हैं, जो परिस्थितियों के बदलने पर भी अपना महत्त्व नहीं खोते। जीवन के प्रत्येक भाव और अभाव को स्वीकार करते हुए संतुलन बनाए रखना तथा अनुभवों से सीखकर आगे बढ़ना ही जीवन की व्यापकता और शाश्वतता का बोध कराता है। 'जननी अब निर्माण कर' कविता इस संग्रह की अत्यंत महत्त्वपूर्ण रचनाओं में से एक है। आमतौर पर परिवारों में बेटियों को सावधान रहने, अपनी सुरक्षा करने और सामाजिक मर्यादाओं का ध्यान रखने की सीख दी जाती है। लेकिन कवयित्री का दृष्टिकोण इससे आगे बढ़कर बेटों के संस्कारों पर केंद्रित है। वे चाहती हैं कि माँ अपने बेटे का पालन-पोषण इस प्रकार करे कि उसके व्यवहार से किसी भी स्त्री को अपमान, भय या असुरक्षा का अनुभव न हो।

यह कविता माँ की भूमिका को एक नई सामाजिक जिम्मेदारी से जोड़ती है। यहाँ माँ केवल अपने बच्चे का लालन-पालन करने वाली जननी नहीं, बल्कि एक संवेदनशील और संस्कारित समाज की निर्माता भी है। कवयित्री चाहती हैं कि बेटा प्रत्येक स्त्री के प्रति वैसा ही सम्मान रखे, जैसा वह अपनी माँ के लिए रखता है। यह भाव पारिवारिक संस्कारों को सामाजिक व्यवहार में रूपांतरित करने की प्रेरणा देता है।

कविता का मूल संदेश केवल इतना नहीं है कि बेटा स्त्रियों का सम्मान करे, बल्कि यह भी है कि उसके आचरण से स्त्रियों के मन में विश्वास पैदा हो। सार्वजनिक परिवहन में साथ यात्रा करने से लेकर कार्यस्थल पर साथ काम करने तक, हर परिस्थिति में महिलाएँ उसके साथ सहज और सुरक्षित महसूस करें। यही सामाजिक अभिभावकत्व की सार्थकता है, जिसमें बच्चों को केवल अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं किया जाता, बल्कि दूसरों के अधिकारों, गरिमा और स्वतंत्रता का सम्मान करना भी सिखाया जाता है।

'धागे' कविता संबंधों की नाजुकता, जुड़ाव और पारस्परिक रिश्तों की उलझनों को सामने लाती है। रिश्तों में व्याप्त झूठ, कपट और उलझी हुई गाँठों से उपजने वाला दर्द इस कविता की भावभूमि का हिस्सा है। संबंधों के धागे जितने आत्मीय होते हैं, उनमें उतनी ही सावधानी और विश्वास की आवश्यकता होती है। जब विश्वास टूटता है, तो रिश्तों की सहजता प्रभावित होती है और मन में पीड़ा की गाँठें पड़ जाती हैं। इस दृष्टि से यह कविता मानवीय संबंधों की जटिलता को रेखांकित करती है।

'व्यस्तता' कविता आधुनिक जीवन की उस स्थिति की ओर संकेत करती है, जिसमें मनुष्य अनेक कार्यों के बीच अपने संबंधों, आत्मचिंतन और मानसिक शांति के लिए समय नहीं निकाल पाता। आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में समय-प्रबंधन के साथ-साथ संवेदनाओं और आत्मीय संबंधों के लिए समय बचाए रखना भी आवश्यक है। जीवन की उपलब्धियाँ तभी सार्थक हो सकती हैं, जब उनके बीच मनुष्य अपने भीतर की शांति और अपनों के साथ जुड़ाव को बनाए रख सके।'बचपन' कविता पाठक को जीवन के सबसे कोमल और संवेदनशील काल की ओर ले जाती है। बचपन की सहजता, निश्छलता और स्मृतियाँ मनुष्य के व्यक्तित्व की आधारभूमि होती हैं। बाल्यकाल के अनुभव जीवन भर मन के किसी कोने में सुरक्षित रहते हैं और समय-समय पर हमारी संवेदनाओं को स्पर्श करते हैं। इस विषय का संग्रह में समावेश जीवन के विविध अनुभवों को स्थान देने की कवयित्री की प्रवृत्ति को सामने लाता है। अब संग्रह की उन महत्त्वपूर्ण कविताओं की ओर बढ़ते हैं, जो पारिवारिक संबंधों, माता-पिता के प्रति कर्तव्य और श्राद्ध -कर्म की सार्थकता पर गंभीर प्रश्न उठाती हैं। 'पितृलोक से तिथि' और 'पितृलोक से श्राद्ध' में एक दिवंगत पूर्वज की कल्पित वाणी के माध्यम से आज के समाज में पितरों के श्राद्ध, तिथि-निर्धारण और कर्मकांडों के प्रति बढ़ती औपचारिकता पर व्यंग्य किया गया है।

इन कविताओं का मूल भाव यह है कि पूर्वजों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि केवल तिथि, तर्पण, भोजन और बाहरी आडंबरों तक सीमित नहीं होनी चाहिए। उनकी वास्तविक स्मृति उनके संस्कारों, आदर्शों, नैतिक मूल्यों और श्रेष्ठ परंपराओं को अपने जीवन में अपनाने से जीवंत रहती है। पूर्वजों के प्रति सम्मान तभी सार्थक है, जब उनके द्वारा दिए गए संस्कार

हमारे व्यवहार में दिखाई दें और हम उनके आदर्शों को अगली पीढ़ी तक पहुँचाएँ। इन रचनाओं का एक महत्त्वपूर्ण संदेश यह भी है कि माता-पिता का सच्चा सम्मान उनके जीवित रहते हुए किया जाना चाहिए। मृत्यु के बाद किए जाने वाले कर्मकांड उस उपेक्षा, अपमान और पीड़ा की भरपाई नहीं कर सकते, जो उन्होंने अपने जीवनकाल में सहन की हो। श्राद्ध का वास्तविक अर्थ केवल स्मरण करना नहीं, बल्कि अपने व्यवहार से प्रेम, सेवा और सम्मान प्रकट करना भी है।

'पितृलोक से श्राद्ध ' कविता में कवयित्री ने ऐसे पिता की उस पीड़ा को स्वर दिया है, जिन्हें उनके जीवित रहते हुए वृद्धाश्रम में छोड़ दिया गया, लेकिन मृत्यु के बाद उनके लिए श्राद्ध-कर्म किया जा रहा है। यह स्थिति पारिवारिक संबंधों में बढ़ती संवेदनहीनता और व्यवहार तथा आडंबर के बीच के अंतर को उजागर करती है। इन दोनों भावभूमियों की कविताओं के माध्यम से उन माता-पिता की पीड़ा अभिव्यक्त होती है, कवयित्री का स्वर इस दोहरे व्यवहार पर प्रश्न उठाता है और पाठक को आत्ममंथन के लिए प्रेरित करता है। इन कविताओं की प्रासंगिकता इसी बात में है कि वे धार्मिक एवं पारिवारिक परंपराओं के बाहरी स्वरूप से आगे बढ़कर उनके भीतर निहित मानवीय मूल्यों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करती हैं।

'पत्रांजन' में विषयों की विविधता उल्लेखनीय है। अनेक विषयों पर आधारित रचनाएँ एक ही संग्रह में मिलती हैं। इससे रचनाकार की विषयगत रुचियों का व्यापक दायरा सामने आता है। कवयित्री व्यक्तिगत अनुभूतियों से लेकर राष्ट्रीय और सामाजिक सरोकारों तक अपनी दृष्टि का विस्तार करती हैं। वास्तव में पाठक को बाँध लेने वाली कविता वह है, जो कम शब्दों में गहरी अनुभूति व्यक्त कर सके और पढ़ने के बाद भी मन में विचारों की हलचल बनाए रखे।

इस संग्रह की कविताओं का भाषा-शिल्प, काव्यात्मक संरचना और विशिष्ट अभिव्यक्ति सराहने योग्य है। 'पत्रांजन' में संकलित कविताएँ अपने साहित्यिक उद्देश्य की पूर्ति करती प्रतीत होती हैं। 'पत्रांजन' को विविध विषयों से संवाद करता हुआ एक सहज सरल भाषा में पठनीय काव्य-संग्रह कहा जा सकता है।आशा है कि यह संग्रह पाठकों के साथ आत्मीय संवाद स्थापित करेगा और उन्हें कविता के माध्यम से अपने समय, समाज तथा जीवन को नए दृष्टिकोण से देखने की प्रेरणा देगा।

